34

क्या हम नाप में पूरे हैं?

(11:1, 2)

इस समय हम छठी और सातवीं तुरहियों के बीच के अन्तराल का अध्ययन कर रहे हैं (10:1-11:13)। इस अन्तराल का मुख्य उद्देश्य यह बताना था कि आने वाले कठिन समयों में कलीसियाओं को क्या *कर रही* होना चाहिए। पिछले दो पाठों में हमने ज़ोर दिया था कि हमें परमेश्वर के वचन के लिए धन्यवाद देना और उसे मानना आवश्यक है। इस पाठ में हम उस वचन के आधार पर *अपनी परख* करने की आवश्यकता पर ज़ोर देंगे।

इस प्रस्तुति का आरम्भ प्रकाशितवाक्य 11 अध्याय के साथ होता है,[1] जिसे कुछ लोग ''बाइबल की सबसे कठिन पुस्तक का सबसे कठिन अध्याय'' मानते हैं।[2] लियोन मौरिस ने लिखा है, ''इस अध्याय की व्याख्या करना असाधारण रूप से कठिन है।''[3] ब्रूस मैज़गर ने माना कि ''इस अध्याय को पूरी पुस्तक के सबसे जटिल भागों में से एक माना जाता है।''[4] मार्टिन किड्डुल ने कहा है कि यह अध्याय '' *प्रकाशितवाक्य* की पूरी पुस्तक में सबसे कठिन और सबसे महत्वपूर्ण है।''[5]

मैं मानता हूं कि इस अध्याय में कुछ अस्पष्ट संकेत हैं, परन्तु अध्याय का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट प्रतीत होता है। इस अध्याय को इतना कठिन *लगने वाला* बनाने में व्यापक अलग-अलग विस्मयकारी व्याख्याओं का हाथ है। '' *प्रकाशितवाक्य* के किसी भाग में ... इससे बढ़कर सजावटी व्याख्याएं नहीं हैं।''[6] ये ''सजावटी व्याख्याएं'' मुख्यतया प्रकाशितवाक्य पढ़ने के अलग-अलग ढंगों का परिणाम हैं।[7] विशेषकर सांकेतिक भाषा को मूल अर्थ में लेने की प्रवृत्ति उलझाने वाली है। कई टीकाओं में आपको यहूदियों, उनके मन्दिर, उनके नगर और समय का अक्षरश: अर्थ मिलेगा।

इतनी उलझन के बावजूद यदि आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिए एक ठोस, समझदारी वाला ढंग अपनाते हैं, तो आपको उस वचन का अध्ययन करते हुए अनावश्यक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ेगा। इस अध्याय में आज की कलीसिया के लिए ज़बर्दस्त सबक हैं। उस वचन को अस्पष्ट करने वाले विवाद को स्थान न दें।

महत्वपूर्ण संदेश

पिछले अध्याय में यूहन्ना को उस छोटी पुस्तक को लेकर खा जाने के लिए बताते समय भाग लेने वाले की भूमिका दी गई थी (10:8-11)। ''बीच में ही'' उसे एक अतिरिक्त काम दे दिया गया था। उसने लिखा ''और मुझे लग्गी के समान एक सरकंडा

दिया गया'' (11:1क)।[8] लम्बे, गन्ने जैसे सरकंडे यरदन घाटी में आम होते थे। ये पौधे दस से अधिक फुट तक ऊंचे हो जाते थे। इस प्रेरित को भी नापने की छड़ी के रूप में इस्तेमाल करने के लिए कुछ ऐसा ही दिया गया था।[9]

फिर ''किसी ने'' उससे बात की (11:1ख), जो शायद ''स्वर्ग से... शब्द'' ही था (10:4) और उसने उसे वह छोटी पुस्तक खा लेने को कहा था।[10] इस ''किसी ने'' उसे आज्ञा दी:

> उठ, परमेश्वर के मन्दिर और वेदी, और उसमें उपासना करने वालों को नाप ले। और मन्दिर के बाहर का आंगन छोड़ दे; उसे मत नाप, क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी (11:1ग, 2)।(मन्दिर को नापना का चित्र देख।)

इसे पढ़ते हुए, एकदम कई प्रश्न मन में उठते हैं: मन्दिर, वेदी और उपासना करने का क्या अर्थ है? उन्हें ''नापने'' का क्या महत्व है? ''मन्दिर के बाहर का आंगन'' क्या है? उस आंगन का क्या महत्व है, जिसे नापा नहीं गया? ''अन्य जातियों को दिया गया है'' शब्दों का क्या अर्थ है? ''पवित्र नगर'' क्या है? किस अर्थ में जातियां पवित्र नगर को पांवों तले रौंदेंगी? ''बयालीस महीने'' का क्या अर्थ है? इन सभी प्रश्नों को देखा जाएगा, परन्तु विवरणों की जटिलता से हमारा ध्यान मुख्य संदेश से हट नहीं जाना चाहिए।

वह संदेश ''नाप'' शब्द में लपेटा गया है। वचन की बात को समझने और उसे मानने के लिए हमारे लिए संकेत को और फिर नापने (या न नापने) के महत्व को समझना आवश्यक है। ऐसा कर लेने पर हम अन्य बातों पर संक्षेप में विचार करेंगे।

मन्दिर का संकेत: परमेश्वर के लोग

मन्दिर को नापने की अवधारणा को समझने के लिए हमारे लिए पहले मन्दिर अर्थात संकेत और वास्तविकता को समझना आवश्यक है।

अध्याय 11 का रूपक सम्भवतया यरूशलेम में हेरोदेस के मन्दिर के प्रबन्ध पर आधारित था, जिसे 70 ईस्वी में रोमी सेना ने नष्ट कर दिया था।[11] हेरोदेस का मन्दिर ही वह मन्दिर था जिसे यूहन्ना जानता था, क्योंकि उसके किसी भी पाठक के जीवनकाल में केवल वही मन्दिर अस्तित्व में था।[12]

आयत 1 में अनुवादित शब्द ''मन्दिर'' के मूल यूनानी शब्द *naos* जिससे सामान्य मन्दिर के प्रांगण उसकी इमारतों, आंगनों तथा ड्योढ़ियों के विपरीत[13] मन्दिर के *पवित्र* भाग के लिए[14] इस्तेमाल किया जाता है। NASB वाली मेरी बाइबल में ''मन्दिर'' पर मार्जिन नोट में ''या, सेंक्चुरी'' है।

आयत 1 में वेदी और मन्दिर में उपासना करने वालों का उल्लेख भी है। जहां तक दर्शन की बात है, ''वेदी'' होमबलियां चढ़ाने के लिए *naos* के बिल्कुल सामने बनी वेदी को या छोटे धूपदान को कहा गया हो सकता है, जो *naos* (पवित्र स्थान) के भीतर थी।[15]

''उपासना करने वाले'' याजक भी हो सकते हैं, जो बलि चढ़ाते और धूप जलाते थे या यहूदी भी जो दिन में कई बार प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते थे।[16]

आयत 2 ''मन्दिर के बाहर का आंगन'' अर्थात पवित्र क्षेत्र के बाहर की बात करती है और कहती है कि यह आंगन ''अन्यजातियों को दिया गया'' था।[17] ''मन्दिर के बाहर'' के इस आंगन का रूपक हेरोदेस के मन्दिर में अन्यजातियों के आंगन से लिया गया लगता है। हेरोदेस के मन्दिर में केवल अन्य जातियों का आंगन ही वह भाग था, जहां किसी गैर यहूदी को जाने की अनुमति थी।[18] इस आंगन और मन्दिर के शेष प्रांगण के बीच अन्यजातियों के लिए आगे बढ़ने के परिणामों की चेतावनियां लिखी रहती थीं।

पृष्ठभूमि को पूरी तरह जानने के लिए यह जानना आवश्यक है कि हेरोदेस का मन्दिर यरूशलेम नगर के उत्तर पूर्वी भाग में था। प्रकाशितवाक्य 11:2 में ''पवित्र नगर'' शब्द यरूशलेम के लिए होगा। नये नियम में दो बार यरूशलेम को ''पवित्र नगर'' (मत्ती 4:5; 27:53) इसलिए नहीं कि यह यीशु और प्रेरितों के समय ''पवित्र'' था, बल्कि इसलिए कहा गया क्योंकि कालांतर में परमेश्वर ने यहूदी लोगों के साथ अपने व्यवहारों के भाग के रूप में ''इसे अलग कर रखा'' था।[19]

यह पृष्ठभूमि देने के बाद मैं जल्दी से कह दूं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सांसारिक नगर में सांसारिक मन्दिर के प्रति चिन्तित नहीं थी। जी. बी. केयर्ड ने टिप्पणी की है कि ''यह कहना बहुत ही कठिन है कि जिस पुस्तक में सभी बातें संकेतों में बताई गई हैं, उसमें अन्तिम बातों अर्थात *मन्दिर* और *पवित्र नगर* का अर्थ सांसारिक मन्दिर और सांसारिक यरूशलेम ही है।''[20]

हम आश्वस्त हो सकते हैं कि 11:1, 2 वाला मन्दिर यरूशलेम का मूल मन्दिर नहीं था। जे. डब्ल्यू. राबर्ट्स ने लिखा है, ''यूहन्ना को जिस मन्दिर को नापने के लिए कहा गया था, वह यरूशलेम वाला मन्दिर नहीं बल्कि, पतमुस पर रहते हुए दर्शन में देखा गया मन्दिर था।''[21] इसके अलावा वचन में यहां बताए गए मन्दिर की रक्षा परमेश्वर ने करनी थी, परन्तु इतिहास बताता है कि ''टाइटस के सिपाहियों ने [सांसारिक] मन्दिर को छोड़ा नहीं बल्कि शेष नगर की तरह नष्ट कर दिया।''[22]

न ही 1 और 2 आयतों वाला मन्दिर वह सांसारिक मन्दिर था, जिसे यरूशलेम में दोबारा बनाया जाना था, जैसा कि हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले प्रीमिलेनियलिस्ट लोग अक्सर तर्क देते हैं। यह विचार कि व्यवस्था की ''निर्बल और निकम्मी ... बातों'' (गलातियों 4:9) को बहाल किया जाएगा। एक विशेष अवधारणा है, जो नकारने के योग्य है। पहली शताब्दी के सताए जा रहे मसीही लोगों को भविष्य में हज़ारों वर्ष बाद मन्दिर के फिर से बनाए जाने की बात से क्या तसल्ली मिल सकती थी?

प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय, यरूशलेम वाला सांसारिक मन्दिर ढह चुका था। इसलिए अध्याय 11 के पहले भाग वाला मन्दिर अवश्य ही आत्मिक वास्तविकता का संकेत है। वह आत्मिक वास्तविकता क्या है? एल्फ्रेड प्लम्मर ने लिखा है, ''यह संदेह करना बहुत ही मुश्किल लगता है कि यहां *मन्दिर* सांकेतिक रूप से मसीह की कलीसिया

के विश्वासी भाग के लिए इस्तेमाल किया गया है।''[23] जिम मैक्गुइगन ने कहा, ''इस पत्र के लिखे जाने तक *परमेश्वर* का केवल *एक* मन्दिर था! परमेश्वर की कलीसिया।''[24]

यह अवधारणा कि कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर है, पूरे नये नियम में मिलती है। पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों से पूछा था, ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, ... ?'' (1 कुरिन्थियों 3:16)। बाद में उसने कहा, ''क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं'' (2 कुरिन्थियों 6:16ख)।[25] इफिसुस की कलीसिया के नाम अपने पत्र में, उसने कहा कि उद्धार पाए हुओं की देह ''प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है'' (इफिसियों 2:21ख)। पतरस पौलुस की बात से सहमत था: ''तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो'' (1 पतरस 2:5क)।

इसी कारण किड्डुल ने लिखा, ''परमेश्वर का एकान्त स्थान यरूशलेम का मन्दिर नहीं, बल्कि विश्वासी मसीहियों का जीवित मन्दिर है।''[26] विलियम हैंड्रिक्सन ने ज़ोर दिया, '''परमेश्वर की वेदी' सच्ची कलीसिया का संकेत है।''[27] जी. आर. बिसले-मुर्रे ने कहा है कि मन्दिर ''मसीह की कलीसिया को दर्शाता है।''[28]

इस बिन्दू को छोड़ने से पहले मुझे ज़ोर देना चाहिए कि 1:1, 2 में जिसे मन्दिर कहा गया है, वह *पृथ्वी पर* था।[29] प्रकाशितवाक्य ''परमेश्वर के मन्दिर'' की भी बात करता है ''जो *स्वर्ग में* है,'' अर्थात जहां परमेश्वर का सिंहासन है।[30] कलीसिया के पृथ्वी पर परमेश्वर का मन्दिर होने की अवधारणा स्वर्गीय मन्दिर के विचार के विपरीत नहीं, बल्कि उसकी पूरक है। बैटसेल बैरट बैमस्टर अक्सर परमेश्वर के राज्य को दो मंज़िला घर के रूप में बताते थे, जिसमें कलीसिया निचले तल पर और स्वर्ग ऊपरी तल पर है: एक राज्य की दो अभिव्यक्तियां। 11:1, 2 में हमें मन्दिर की सांसारिक अभिव्यक्ति (कलीसिया) मिलती है जबकि 11:19 में इसका स्वर्गीय रूप मिलता है।

संकेतों की परख करना: परमेश्वर की सुरक्षा

यह सिद्ध करने के बाद कि 11:1, 2 वाला मन्दिर कलीसिया ही है, हम निर्णायक प्रश्न पर विचार करने को तैयार हैं कि मन्दिर को *नापने* का क्या महत्व है?

पुराने नियम की कई आयतें ईश्वरीय ''नापने'' की बात करती हैं; परन्तु जैसा कि हमने प्रकाशितवाक्य 11 में पढ़ा, हमें विशेष रूप से यहेजकेल 40 से 43 का स्मरण आता है, जहां उस नबी ने 587 ई.पू. में पुराने मन्दिर के नष्ट होने के बाद नये मन्दिर को नापे जाने का दर्शन देखा था। (देखें यहेजकेल 40:3-5.) यहेजकेल के दर्शन वाला नाप मन्दिर को फिर से बनाए जाने के पूर्वानुमान में[31] ''स्वर्गीय राज का सर्वेक्षण''[32] का भाग था। यह यहेजकेल के सांत्वना विभाग का भाग था, जिसमें नबी ने इस्राएलियों को आश्वासन दिया कि परमेश्वर उन्हें भूला नहीं था और अन्त में उन्हें उनके देश में लौटा देगा। (वह ईश्वरीय प्रतिज्ञा तब पूरी हुई, जब यहूदी लोग एज्रा और नहेम्याह के समय में दासता से यरूशलेम में लौटे थे।)

केयर्ड ने कहा है, ''यूहन्ना इसी आकृति को यहां लाता है, परन्तु सामान्य की तरह उसे

अपने उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करता है।''[33] यहेजकेल के दर्शन वाला नाप *बहाली* का पूर्वानुमान था, जबकि यूहन्ना के दर्शन वाला नाप *सुरक्षा* का पूर्वानुमान था।

नाप के *सुरक्षा* का पूर्वानुमान होने का विचार इस संदर्भ में मिलता है। उदाहरण के लिए आयत 2 देखें, जहां यूहन्ना से कहा गया था, ''पर मन्दिर के बाहर का आंगन छोड़ दे; उसे मत नाप, क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी।'' यूनानी शब्द के अनुवाद ''छोड़ दे'' का मूल अर्थ ''बाहर फैंक दे'' है;[34] यह शब्द *ठुकराए* जाने की अवधारणा को दिखाता है। न नापा जाने वाला भाग परमेश्वर द्वारा ठुकराया जाना था। नापा *जाने* के लिए, परमेश्वर द्वारा *स्वीकार्य* होना आवश्यक था।

न नापा गया आंगन ''अन्यजातियों को दिया गया'' था, जिन्होंने ''पवित्र नगर को'' और (सांकेतिक अर्थ में) आंगन को पांव तले रौंद देना था। ''रौंदना'' का अर्थ कब्ज़ा करना, बर्बाद करना, और नष्ट करना था। उदाहरण के लिए जब यीशु ने रोमियों द्वारा यरूशलेम के विनाश की भविष्यवाणी की तो उसने कहा, ''यरूशलेम अन्यजातियों से रौंदा जाएगा'' (लूका 21:24ख)।[35] जोसेफस तथा अन्य द्वारा दिए गए यरूशलेम के विनाश के विवरण पढ़ें तो आप ''रौंदेंगी'' शब्दों की भयावहता को समझ जाएंगे। न नापे जाने का अर्थ भेद्य और *असुरक्षित* होना था। इसके विपरीत नापा जाना अभेद्य और *सुरक्षित* होने का संकेत था।

नापे जाने और *सुरक्षित* होने में सम्बन्ध को कैसे दिखाया जा सकता है? सुरक्षा कवच पहनाए जाने के लिए नापे जाने वालों के लिए बुलेट प्रूफ जैकट पहनने के लिए लिया जाने वाला सिपाही का नाप, सुरक्षात्मक पैडों के लिए एक फुटबॉल खिलाड़ी का लिया जाने वाला नाप, स्पेस सूट पहनने के लिए अंतरिक्ष यात्री का नाप ध्यान में आते हैं। एक दूसरा विचार मुझे ओक्लाहोमा से मिला है: ओक्लाहोमा क्षेत्र खुलने के समय लोग भूमि पर अपने दावे करते हुए मंडराते थे। फिर वे भूमि को नापते, अपने खूंटे नीचे फैंकते और हाथों में बदूकें लिए सब में घोषणा करते थे, ''यह मेरी है, कोई इधर नहीं आएगा!'' इसी प्रकार मन्दिर के ईश्वरीय सर्वेक्षण की घोषणा करते हुए वास्तव में परमेश्वर ने कहा ''ये आराधना करने वाले मेरे हैं और तुम उन्हें हानि नहीं पहुंचाओगे!''

मेरा मानना है कि प्रकाशितवाक्य 11:1, 2 का मुख्य संदेश यही था, आगे आने वाले कठिन समयों में *प्रभु ने अपने लोगों की रक्षा करनी थी।* याद रखें कि यह छठी और सातवीं मुहरों के अन्तराल के बीच का संदेश था, जब यूहन्ना ने 1,44,000 को मुहर लगते देखा।[36] हमें ''पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर'' (कुलुस्सियों 4:12) रहने में अपनी सहायता के लिए बार-बार इस संदेश की आवश्यकता है।

समय का संकेत: परमेश्वर की प्रतिज्ञा

सुरक्षा के विषय पर चर्चा करते हुए हमें वचन में यहां बताए बयालीस महीनों की भी बात करनी आवश्यक है। बयालीस महीनों का संकेत कठिन समयों में सुरक्षा की अवधारणा

से जुड़ा है। नगर और आंगन बयालीस महीनों तक सुरक्षित *नहीं* होने थे, जिसका अर्थ यह है कि उस समय के लिए मन्दिर सुरक्षित होना था।

अब तक हमने प्रकाशितवाक्य के कई सांकेतिक अंकों का अध्ययन कर लिया है, जिससे आपको अहसास होना चाहिए कि बयालीस महीनों का अर्थ समय का काल नहीं परन्तु फिर भी हमें इस अंक के महत्व को निर्धारित करना आवश्यक है। पूरी पुस्तक में यह विभिन्न रूपों में मिलेगा।

पहले एक पाठ में हमने देखा था कि ''सात'' सम्पूर्णता को दर्शाता है, जिसका अर्थ यह हुआ कि ''3-1/2'' अधूरे का सुझाव देता है।[37] इसके अलावा हमने कहा था कि प्रकाशितवाक्य में ''3-1/2'' परीक्षा, कठिनाई, परख के साथ आगे बेहतर समय से भी जुड़ा होता है। अन्त में हमने देखा था कि पुस्तक में ''3-1/2'' को कई रूपों में दर्शाया गया है। पहले 11:2 में एक वाक्यांश है ''बयालीस महीने।'' बयालीस महीने 3-1/2 वर्ष ही बनते हैं।[38] ''बयालीस महीने'' वाक्यांश 13:5 में भी मिलता है, जहां पशु को ''बयालीस महीने काम करने का अधिकार दिया'' जाता है।[39]

एक और अभिव्यक्ति ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन'' बाहर है। एक महीने में तीस दिन मानकर चलें,[40] तो यह बयालीस महीने या 3-1/2 वर्ष ही बनते हैं। अध्याय 11 बाद में हम ध्यान देंगे कि दो गवाह ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक भविष्यवाणी करेंगे'' (11:3)। अगले अध्याय में, स्त्री ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक पाली'' जाएगी (12:6)।

इसके अलावा ''एक समय और समयों और आधे समय'' की एक अजीब अभिव्यक्ति मिलती है।[41] अध्याय 12 में आगे देखें तो आयत 6 कहती है कि वह स्त्री ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक पाली'' गई जबकि आयत 14 कहती है कि ''वह एक समय और समयों और आधे समय तक पाली'' गई। ''एक समय और समयों और आधा समय'' ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन'' या ''3-1/2 वर्ष'' कहने का एक और ढंग है।

कुछ क्षण पहले मैंने कहा था कि प्रकाशितवाक्य में ''3-1/2'' आमतौर पर परीक्षा, कठिनाई और परख से जुड़ा होता है। जिन उदाहरणों पर हमने विचार किया है उनमें से हर एक का सम्बन्ध परमेश्वर के लोगों के लिए परीक्षा, कठिनाई और परख से जुड़ा है: ''पवित्र नगर'' का रौंदा जाना (11:2), दो गवाहों का विरोधी संसार का सामना करना (11:3, 5) स्त्री को पाला जाना जिसमें उसने भयंकर अजगर से अपने आप को छिपाया (12:13, 14), और पशु को काम करने का अधिकार दिया जाना (13:5)। परन्तु हम यह न भूलें कि संख्या का सकारात्मक पहलू है। ''3-1/2'' को हमें अधूरे के रूप में देखना चाहिए यानी यह सीमित है अर्थात यह सदा तक नहीं रहता। इसी कारण इस्तेमाल किए गए वाक्यांश का संकेत कल के लिए आशा है। अध्याय 11 से 13 की परीक्षाओं का अध्ययन करते हुए हम अक्सर देखेंगे कि परमेश्वर ने उनकी लम्बाई कम कर दी।

''बयालीस महीनों'' के अर्थ का सार जिम मैक्गुइगन ने यह कहते हुए दिया कि यह ''*किसी परिस्थिति पर बोलने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली,* समय की अवधि'' है! ''... जिसमें पवित्र लोग सताव के अधीन हैं, परन्तु सुरक्षित हैं; जिसमें वे कष्ट में हैं, परन्तु

स्थिर हैं; जिसमें वे सताए जाते हैं, परन्तु फिर भी विजयी हैं!''[42] यह हमें प्रकाशितवाक्य 11:1, 2 के मूल संदेश में वापस ले आता है: परमेश्वर अपने लोगों के साथ है और उनकी रक्षा कर रहा है!

संकेत की परख: परमेश्वर का उद्देश्य

नापने की अवधारणा में उप सिद्धान्त का संदेश शामिल है: सुरक्षित होने के लिए, कलीसिया को पहले नापा जाना आवश्यक था। अन्य शब्दों में कलीसिया के लिए परमेश्वर के लिए आशीष पाने से पहले ''नापे जाना'' था।[43]

यह देखने की जांच करने की अवधारणा कि लोगों को ''नापा गया'' या नहीं बाइबल में अक्सर मिलती है। बेलशस्सर को बताया गया था कि ''तराज़ू में तौला गया और हल्का पाया गया'' (दानिय्येल 5:27)। आमोस के समय में परमेश्वर ने अपने लोगों को परखने के लिए साहुल का इस्तेमाल किया था (आमोस 7:7, 8)। प्रकाशितवाक्य के आरम्भिक पृष्ठों पर हमने यीशु को कलीसियाओं के बीच में चलते अर्थात उनकी परख करते देखा था (प्रकाशितवाक्य 2:2, 19; 3:1, 8, 15); उसकी स्वीकृति पाने वालों को ही आशीष मिल पाई थी। अब अध्याय 11 में परमेश्वर के लोगों पर नापने के लिए एक छड़ी का इस्तेमाल होना था। रक्षा केवल उन्हीं की होनी थी,जो *सचमुच में* उसके लोग थे।

इस पाठ में आगे मैं आत्मिक रूप से ''नापे जाने'' की आवश्यकता पर कुछ कंहूगा। अभी मैं केवल इतना ही ज़ोर देना चाहता हूं कि 11:1, 2 का संदेश यह है कि (1) परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा; (2) उनकी रक्षा करने से पहले उन्हें नापा जाना आवश्यक है। मेरा मानना है कि यहां पर चर्चा समाप्त करके हम वह पा सकते हैं कि हम इन आयतों से सीखें। इन महान सच्चाइयों की तुलना में आप इन विवरणों को नकारें या न इसका कोई महत्व नहीं है।

अप्रासंगिक विवरण

सम्पूर्णता के लिए, हमें कुछ और अस्पष्ट आयतों के लिए थोड़ा और समय देना होगा, वचन में तीन अलग-अलग स्थानों का उल्लेख है, (1) मन्दिर का, (2) आंगन का और (3) नगर का। यदि कलीसिया मन्दिर है तो आंगन और नगर क्या हैं? याद रखें कि न तो आंगन को नापा गया और न नगर को। इसलिए दोनों में से किसी के लिए पमरेश्वर की विशेष सुरक्षा नहीं है।

वर्षों से, नगर की व्याख्या, जो मुझे पसन्द करता है, यह है कि यह *संसार* अर्थात अविश्वासियों को कहा गया है, जिन पर अधिकतर मुहरों और सात तुरहियों के द्वारा परमेश्वर का न्याय पड़ रहा है। यदि हम मान भी लें कि नगर, संसार के जितना है, तो भी हमारे लिए एक पहेली बची है कि आंगन किसे कहा गया है।[44] कई टीकाकारों के अनुमान हैं कि आंगन में दोचित्ते मन के और वे लोग हैं, जो समर्पित नहीं हैं यानी कलीसिया के अविश्वासी सदस्य ही हैं, जिन्हें नापा नहीं जाता। यह व्याख्या आंगन के उन लोगों को सात

कलीसियाओं वाले उन लोगों से मिला देगी, जिनमें यीशु ने ''कमी'' पाई थी।

> पिरागमुन में बिलाम के या थुआतीरा में इज़ेबेल के पीछे चलने वाले, इफिसुस के स्नेह रहित, सरदीस के दिखावटी, पाखण्डी लौदीकिया के रौबदार, आत्मसंतुष्ट लोगों जैसे लोग सच्चे मसीही नहीं थे।[45]

इसे आज कलीसिया पर लागू करें तो आंगन में ''कलीसिया के सांसारिक सदस्य'' होंगे जो ''संसार के विचारों का स्वागत करते हैं; सांसारिक संगति पसन्द करते हैं; राजनैतिक पदों पर मत देने में सांसारिक धारणाएं रखते हैं; संसार से प्रेम रखते हैं।''[46] मैं इस व्याख्या से पक्षपात करता हूं। बेशक यह सच है कि यदि कोई परमेश्वर के निकट नहीं आता तो परमेश्वर भी उसके निकट नहीं आएगा। (देखें याकूब 4:8.) इस व्याख्या (या किसी आंगन की किसी भी अन्य व्याख्या की) की कमज़ोरी यह है कि यह केवल अनुमान है।

ताज़ा अध्ययन में मुझे एक और सम्भावना मिली: विचार यह है कि तीनों स्थल यानी मन्दिर, आंगन और नगर कलीसिया को दर्शाते हैं। इस व्याख्या के अनुसार मन्दिर उसे दर्शाता है, जिसकी कलीसिया के सम्बन्ध में परमेश्वर रक्षा *करता* है, जबकि आंगन नगर को दर्शाता है, जिससे परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा *नहीं* करता। इसे और तरह से कहें, तो मन्दिर *भीतरी मनुष्य* को दर्शाता है, जिसकी रक्षा परमेश्वर करता है, जबकि आंगन और नगर *बाहरी मनुष्य* को जिसकी रक्षा परमेश्वर नहीं करता।[48] परन्तु इसमें अपनी सामर्थ है:[49] इसमें सुरक्षा और कष्ट का मेल हो जाता है,[50] और इसमें मसीहियत के कड़वे मीठे स्वभाव पर ज़ोर दिया जाता है।[51]

इन दो विचारों के सम्बन्ध में, होमेर हेली ने कहा है कि दोनों ही वचन से मेल खाते हैं, जिस कारण यह जानना असम्भव है कि पवित्र आत्मा के मन में क्या था।[52] यह भी हो सकता है कि आंगन और नगर में कोई अन्तर हो ही न, यानी इन विवरणों का कुछ नहीं होगा। फिर मैं ज़ोर दूंगा कि यहां इस्तेमाल किए गए वचन के मूल संदेश को समझने के लिए इन सब को पूरी तरह से समझना आवश्यक नहीं है: (1) परमेश्वर ने अपने लोगों की रक्षा करने की प्रतिज्ञा दी है; (2) रक्षा किए जाने से पूर्व उन्हें नापा जाना आवश्यक है।

आवश्यक प्रासंगिकताएं

जैसे-जैसे पाठ समाप्ति की ओर आ रहा है, मैं इस तथ्य पर ध्यान दिलाना चाहता हूं कि परमेश्वर आशीष तभी दे सकता है, यदि हम नाप में पूरे हों।

स्वर्गीय नाप

आइए इस नाप लेने वाले मानक पर और जो नापा जाना है, उस पर विचार करें। अधिकतर लोग इससे सहमत होंगे कि नापने का मानक परमेश्वर का वचन है। यीशु ने कहा, ''जो तुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को देषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा''

(यूहन्ना 12:48)। वचन यदि न्याय के दिन मानक होगा तो आज भी है। एल्ड्रेड एकोल्स ने नापने वाली छड़ी को ''सच्चाई का वचन, एकमात्र मानक, जिससे आत्मिक बातें नापी जा सकती हैं।''[53] उसने कहा:

> परमेश्वर न तो हमें स्वयं आकर अगुआई देगा और न ही जीवित प्रेरितों के द्वारा हमारी निगरानी करेगा। सो पृथ्वी पर परमेश्वर का मन्दिर बनाने का एकमात्र नक्शा उसकी प्रेरणा से दिया गया वचन है। यह हमें ''जीवन और भक्ति से सम्बन्ध'' रखने वाली हर चीज़ देता है (2 पतरस 1:3)। बाइबल नापने की वह छड़ी है, जिससे हमें पता चल सकता है कि सामूहिक और निजी स्तर पर परमेश्वर अपनी कलीसिया से क्या चाहता है।[54]

यदि नापने का मानक वचन है, तो नापा क्या जाना है? यूहन्ना को ''परमेश्वर के मन्दिर और वेदी और उसमें उपासना के करने वालों को नाप'' लेने के लिए कहा गया (11:1)। आइए एक-एक करके इनकी समीक्षा करते हैं:

(1) पूरा मन्दिर।

याद रखें कि मन्दिर कलीसिया है। अध्याय 2 और 3 में जब यीशु ने सात कलीसियाओं को नापा था तो उसने उन्हें अन्दर-बाहर से जांचा था। उसने देखा कि वे क्या शिक्षा दे रही हैं और उनका जीवन कैसा है। कोई मण्डली सिद्ध नहीं है, परन्तु हर मण्डली के लिए जहां तक हो सके ईश्वरीय मानक के निकट आने की कोशिश करना आवश्यक है।

(2) मन्दिर में होने वाली आराधना।

''वेदी'' मन्दिर की आराधना का प्रतीक और हमारे द्वारा परमेश्वर की आराधना करने का संकेत है। हर मसीही याजक है, जिसे ''आत्मिक बलिदान चढ़ाने'' का अधिकार दिया गया है (1 पतरस 2:5)। इब्रानियों की पत्री के लेखक ने कहा, ''हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान, अर्थात उन होठों का फल, जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें'' (इब्रानियों 13:15)।

परमेश्वर की आराधना करते हुए ''हे प्रभु, हे प्रभु'' कहना ही काफी नहीं होता यानी पिता की जो स्वर्ग में है, इच्छा पूरी करनी भी आवश्यक है (मत्ती 7:21)। यीशु ने कहा, ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें'' (यूहन्ना 4:24)। ''आत्मा'' में यह बात शामिल होगी कि हम आराधना *कैसे* करते हैं (फिलिप्पियों 3:3); ''सच्चाई'' में यह शामिल होगा कि हम *क्या* करते हैं (यूहन्ना 17:17)। हमारा मन सही होना और हमें नये नियम में दिए नमूने के अनुसार आराधना करना आवश्यक है।

आराधना सबसे पहले आती है; यह हमें एक-दूसरे के निकट लाती है; यह मसीह में हमारे एक होने की अभिव्यक्ति है। (देखें 1 कुरिन्थियों 10:16, 17.) जो आराधना परमेश्वर द्वारा अधिकृत नहीं है उससे एक-दूसरे के साथ और प्रभु के साथ हमारी संगति प्रभावित होती है।

प्रभु की कलीसिया के इतिहास पर मेरी पुस्तक, *वायसेस क्राइंग इन द विल्डरनैस* में,[55] मैंने सदियों से ''मसीही'' आराधना में हुए परिवर्तनों का एक चार्ट दिया था: ''मास'' की शुरुआत, क्वायरों और गाने के साथ बाजों का इस्तेमाल और पुराने नियम में से धूप जलाने की बात को लेने जैसे परिवर्तन। इनमें हाल ही में हुए परिवर्तन जैसे प्रभु भोज केवल विशेष अवसरों पर लेना और भोज लेने में अनाधिकृत वस्तुओं का इस्तेमाल जोड़े जा सकते है। ऐसे मामलों का वर्षों तक अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि आराधना में परिवर्तन मसीह में संगति को सबसे अधिक प्रभावित करता है। जब तक मसीही लोग इकट्ठे आराधना करते हैं, वे इन मतभेदों पर विचार कर सकते हैं; परन्तु जब उनकी आपस की आराधना प्रभावित होती है, तो फूट सिर पर लटक रही होती है।

हम आराधना कैसे करते हैं, इसका महत्व है। पमरेश्वर के पास हमारे कामों तथा हमारे मनों को नापने की छड़ी है।

(3) व्यक्तिगत आराधना करने वाले।

''उसमें उपासना करने वालों'' वाक्यांश निश्चय ही कलीसिया के एक-एक सदस्य को कहा गया है। अन्त में परमेश्वर के मापक व्यक्तिगत ही होंगे। अन्तिम दिन में परमेश्वर के सामने हम समूह के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से खड़े होंगे। ''इसलिए हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा'' (रोमियों 14:12)।

व्यक्तिगत जांच

यह मुझे उस प्रासंगिकता तक ले आता है, जो मैं चाहता हूं कि हम में से हर कोई बनाए। यदि परमेश्वर हमारी जांच वचन के अनुसार कर रहा है तो क्या हमें भी अपनी जांच नहीं करनी चाहिए? प्रभु भोज लिए जाने के बारे में पौलुस ने जब कुरिन्थुस के लोगों को लिखा, तो उसने कहा कि पहले मनुष्य ''अपने आप को जांच ले'' (1 कुरिन्थियों 11:28)। कुरिन्थियों के नाम अपने दूसरे पत्र में इस प्रेरित ने कहा, ''अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं। अपने आप को जांचो।'' फिर उसने कहा, ''कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम जांच में निकम्मे निकले हो'' (2 कुरिन्थियों 13:5)।

यदि परमेश्वर कलीसिया की डाक्ट्रिन या शिक्षा को नापता है तो मुझे अपने विश्वासों तथा शिक्षा को नापना आवश्यक है। यदि परमेश्वर कलीसिया के मन को नापता है तो मुझे यह नापने की आवश्यकता है कि मैं कहां तक प्रेम रखता हूं। यदि परमेश्वर कलीसिया की आराधना को नापता है तो मुझे अपनी निजी और सार्वजनिक आराधना को जांचना आवश्यक है। यदि परमेश्वर कलीसिया की जीवन शैली को नापता है तो मुझे नैतिकता और सेवा के अपने उदाहरण की जांच करना आवश्यक है। यदि हम ईमानदार हैं तो ऐसी जांचों से कमियां ही सामने आएंगी। यकीनन मैं यह दावा नहीं कर रहा हूं कि प्रिय बनने और प्रभु से रक्षा पाने के लिए हमें सिद्ध होना आवश्यक है। उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह के आधार पर ही है (इफिसियों 2:8, 9)। मैं जो कहना चाहता हूं वह यह है कि हमें भी अच्छी तरह समझने वाला जानता है कि हम क्या हो सकते हैं या क्या नहीं, अपनी पूरी क्षमता से प्रभु

की आज्ञा मानने के लिए समर्पित हैं या नहीं। यदि हम अपने साथ ईमानदार होंगे तो हमें भी पता चल सकता है। हम में से हर कोई हमें अपने आफ्को जांचते रह कर लाभ उठा सकता है।

सारांश

हम में से अधिकतर को अपने बजाय दूसरों की जांच करना अच्छा लगता है। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने इसी प्रवृत्ति की बात की थी: ''तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता?'' (मत्ती 7:3)। इसके अलावा आत्म-निरीक्षण करते हुए भी हम कई बार अपने आप को धोखा देते हैं। अमेरिकी दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स ने लिखा है, ''जब भी दो लोग इकट्ठा होते हैं तो वास्तव में वहां छह लोग होते हैं, हर व्यक्ति अपने आप को देखता है, हर व्यक्ति को दूसरा व्यक्ति देखता है, और हर व्यक्ति जो वास्तव में है।''[56] इस पाठ की चुनौती तिहरी है: (1) अपने आप को जांचें, दूसरों को नहीं। (2) ऐसा करते हुए, अपने आप को वैसा ही देखने की कोशिश करें, जैसे परमेश्वर हमें देखता है-यानी अपने आप को परमेश्वर के दर्पण में देखें (याकूब 1:21-25)। (3) उन ढंगों का पता चलने पर, जो हमें बदलने आवश्यक हैं, आइए ''वचन पर चलने वाले बनें, न कि केवल सुनकर अपने आप को धोखा देने वाले।''[57]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

''क्या हम पान में पूरे हैं?'' वाला चार्ट फिर से बनाया गया है, जिसे मैंने इस पाठ को सिखाने में इस्तेमाल के लिए बनाया था। इस चार्ट का उद्देश्य प्रकाशितवाक्य 11:1, 2 के गौण संदेश पर ज़ोर देना था; यह तथ्य कि इससे पहले कि हमारी रक्षा हो हमें ''पान में पूरे होना'' आवश्यक है। परन्तु चार्ट में मुख्य संदेश भी दिया गया है: बाईं ओर के बीच वाला बॉक्स कहता है, ''प्रभु अपने लोगों की रक्षा करेगा। ...'' मुझे लगता है कि बाईं ओर के निचले बॉक्स की बातों के सम्भावित अपवाद (''अपने आप को'' के नीचे) के साथ चार्ट की अधिकतर बातें अपनी व्याख्या आप करती हैं। वे आयतें यह ज़ोर देने के लिए हैं कि *परमेश्वर* हमारी जांच करता है, जो इस बात को आवश्यक बना देता है कि हम अपनी जांच स्वयं करें।

टिप्पणियां

[1]विशेषकर, हम 1 और 2 आयतों को देखेंगे। इस तथ्य के बावजूद कि इस दावे का कोई सबूत नहीं है, उदार ''विद्वानों'' में यह कहना आम है कि ये आयतें मूल रूप से रोम द्वारा यरूशलेम पर कब्जे के समय ज़ेलोतेस ''नबी'' द्वारा लिखी गई थीं। जी. बी. केयर्ड ने निष्कर्ष निकाला कि ''इस शिक्षा को असम्भवतया, व्यर्थ और बेतुकी कहा जाना चाहिए'' (*ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन आफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* [लंदन: एडम

एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966], 131)। [2]माइलो हैडविन, द *ओवरकमर्स: सरमन्स ऑन रैवलेशन* (आरलिंग्टन, टैक्सस: मिशन प्रिंटिंग, तिथि नहीं), 105. [3]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो.संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 140. [4]ब्रूस एम.मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 68. [5]मार्टिन किड्डुल, द *रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन,* द मौफट न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, पब्लिशर्स, 1940), 174. कुछ लोगों द्वारा इसे प्रकाशितवाक्य का ''सबसे महत्वपूर्ण'' अध्याय माना जाता है क्योंकि (1) दो गवाहों की कहानी पूरी पुस्तक के सार का काम कर सकती है, और (2) 11:15 को कुछ लोग पुस्तक की मुख्य आयत मानते हैं। [6]एच. एल. एलिसन, *1 पीटर-रैवलेशन,* स्क्रिप्चर यूनियन बाइबल स्टडी बुक्स सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 64. [7]प्रकाशितवाक्य के अलग-अलग ढंगों की समीक्षा के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''अच्छी शुरुआत मानो आधा काम पूरा हो गया है'' में देखें। [8]देखें KJV. NASB वाली मेरी बाइबल की प्रति के मार्जिन नोट में है, "Lit. *reed.*" यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मे का वर्णन करते समय इसी शब्द का इस्तेमाल किया (लूका 7:24); परन्तु यीशु द्वारा वर्णित सरकंडा एक लचीला डंडा था, जबकि प्रकाशितवाक्य 11:1 में वर्णित सीधा (''छड़ी जैसा'') था। [9]इस छड़ी की तुलना यहेजकेल वाली नापने की छड़ी से करें, जो छह या अधिक हाथ (लगभग नौ से दस फुट) लम्बी थी (यहेजकेल 40:5)। [10]यह बात कि 11:3 में ''किसी ने'' ''*मेरे ... गवाहों* '' का संकेत है कि *परमेश्वर* बात कर रहा है। KJV का अनुवाद है ''और स्वर्गदूत यह कहते हुए खड़ा था,'' परन्तु हस्तलिपि का प्रमाण इस वाक्यांश को छोड़ देने के पक्ष में है। निश्चिय ही यह सम्भव है कि प्रभु के प्रतिनिधि के रूप में सामर्थी स्वर्गदूत ने ही यूहन्ना को परमेश्वर के निर्देश दिए थे।

[11]इसमें यह माना जाता है कि डोमिशियन के समय प्रकाशितवाक्य के लिखे जाने की हमारी तिथि सही है। [12]मन्दिर की विभिन्न विशेषताओं का उल्लेख होने के कारण, हेरोदेस के मन्दिर (ऊपर) का रेखाचित्र देखें। 11:1, 2 का रूपक केवल एक आंगन वाली *वेदी* से लिया जा सकता है, परन्तु यह वाक्य कि यह आंगन जातियों/अन्यजातियों को दिया गया था, निश्चय ही हेरोदेस के मन्दिर में अन्यजातियों के आंगन से मिलता-जुलता है। [13]पूरे मन्दिर के प्रांगण के लिए यूनानी शब्द *hieron* है। इस शब्द का इस्तेमाल मत्ती 4:5 और 2:14 में हुआ था। [14]मत्ती 23:35 और 27:51 में मन्दिर के पवित्र भाग के लिए जहां केवल याजक ही जा सकते थे *naos* शब्द का इस्तेमाल हुआ है। [15]प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दो वेदियों का रूपक एक-दूसरे को साथ मिला देता है (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में 6:9 और 8:3 पर नोट्स और इस भाग में 9:13 पर नोट्स देखें), सो इस वेदी की सही पहचान न तो सम्भव है न महत्वपूर्ण। सम्भवतया इस आयत में धूपदान के रूपक को प्राथमिकता दी जाएगी (1) यही वह वेदी है जिसका उल्लेख प्रकाशितवाक्य में सबसे अधिक हुआ है और (2) यही वेदी यहूदी लोगों द्वारा की जाने वाली आराधना से जुड़ी थी (वे धूप जलाए जाने के समयों में प्रार्थना के लिए मन्दिर में इकट्ठे होते थे)। [16]''मन्दिर'' के लिए शब्द *naos* है, इसलिए याजकों रूपक को प्राथमिकता दी जा सकती है। याद रखें कि हर मसीही ''याजक'' है (1 पतरस 2:5, 9; प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:10)। [17]यूनानी शब्द *ethne* है, जिससे "ethnic groups" वाक्यांश निकला है। NASB में कई आयतों में इस शब्द का अनुवाद ''अन्यजातियों'' के रूप में हुआ है (उदाहरण के लिए मत्ती 4:15; प्रेरितों 11:1)। ''जातियों'' सामान्य शब्द हो सकता है, परन्तु प्रकाशितवाक्य में आमतौर पर इसका इस्तेमाल मसीह का विरोध करने वालों के लिए हुआ है (देखें 11:18), और यहां इसका यही अर्थ है। [18]अन्य जातियों का आंगन ही था जहां यीशु ने व्यापार करने वालों को निकाला था (यूहन्ना 2:13-16)। यह ''सुसमाचार के पहले संदेश'' का सम्भावित स्थान था (लूका 24:53; प्रेरितों 2:1) और पतरस के दूसरे लिखित प्रवचन का पक्का स्थान था (प्रेरितों 3:3, 12)। आरम्भिक कलीसिया कई बार वहां इकट्ठी होती थी (प्रेरितों 5:12)। [19]यह भी सम्भव है कि यह नगर 11:8 वाला ''बड़ा नगर'' ही था। यदि ऐसा है तो यह इसकी और व्याख्या है। इस पुस्तक में ''क्या आप मरने को तैयार हैं?'' पाठ में ''बड़ा नगर'' पर नोट्स देखें। [20]केयर्ड, 131.

[21]जे. डब्ल्यू. राबर्ट्स, द *रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (आस्टिन,

टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 11. [22]वही, 88.[23] *द पुलपिट कमैंट्री* अंक 22, *एपिस्टल्स ऑफ़ पीटर , जॉन एण्ड ज्यूड, द रैवलेशन,* संपा.एच.डी.स्पेंस एण्ड जोसेफ एस.एक्सल में एल्फ्रड प्लम्मर, ''द रैवलेशन आफ सेंट जॉन द डिवाइन।'' [24]जिम मैक्गुइगन, *द बुक आफ रैवलेशन, लुकिंग इन टू बाइबल सीरीज़* (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनेशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 155. [25]1 कुरिन्थियों 3 और 2 कुरिन्थियों 6 के ''मन्दिर'' वाली आयतें पूरी कलीसिया *और* कलीसिया के एक-एक सदस्य पर लागू होती हैं। देह सदस्यों से बनती है इसलिए एक-एक सदस्य के मन्दिर होने या कलीसिया के मन्दिर होने की बात पर विचार करने या न करने से कोई फर्क नहीं पड़ता। दोनों अवधारणाएं सही हैं। [26]किड्डुल, 180. [27]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 153. हैंड्रिक्सन ने इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए अपनी पुस्तक के 154-55 पृष्ठों पर छह तर्क दिए हैं। [28]जी. बी. बिसले-मुर्रे, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1974), 182. देखें मौरिस, 142; यूजीन एच. पीटरसन, *रिवर्सड थंडर* (सेन फ्रेंसिस्को: हार्परकोलिंस पब्लिशर्स, 1988), 111; विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 68. [29]आयतें 1 और 2 उस दर्शन के आगे की हैं, जहां यूहन्ना ने शक्तिशाली स्वर्गदूत से जो पृथ्वी पर और समुद्र पर खड़ा था, छोटी पुस्तक लिए (10:8, 9)। [30]देखें 11:19; 16:17ख; 14:17; 15:5 भी देखें।

[31]हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले कई लोग यहेजकेल के दर्शन को यह ''साबित'' करने के लिए इस्तेमाल करते हैं कि यरूशलेम में एक भौतिक मन्दिर बनाया जाना है। उनका तर्क कुछ इस प्रकार होता है: ''हेरोदेस का मन्दिर हू-ब-हू यहेजकेल वाले मन्दिर जैसा नहीं था, परन्तु इन बातों पर विचार करते हैं: (1) यहेजकेल की भाषा सांकेतिक है और उसे अक्षरश: नहीं लिया जाना चाहिए। (2) ज़रुब्बाबिल वाला मन्दिर (बाद में हेरोदेस द्वारा उसे विस्तार दिया गया) भविष्यवाणी का आंशिक पूरा होना था, परन्तु इस आयत में कलीसिया में (पृथ्वी का आत्मिक मन्दिर) और स्वर्ग (स्वर्गीय मन्दिर) में अन्तत: पूरा होना मिलता है। (3) हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले यरूशलेम के बनाए जाने वाले मन्दिर जैसे *किसी भी* ढांचे से रोमांचित हो उठते हैं, जो यह साबित करता है कि वास्तव में उनका विश्वास यह नहीं है कि यहेजकेल वाले मंन्दिर की बातें आवश्यक हैं। यह बेमेलपन उनके इस तर्क को झुठला देता है कि हेरोदेस का मन्दिर यहेजकेल के दर्शन वाले मन्दिर की हर बात से मेल नहीं खाता।'' [32]केयर्ड, 130. [33]केयर्ड, 130. और सही हम यह कहेंगे कि प्रभु (जिसने प्रकाशन दिया) ''इसे'' अपने लक्ष्य के लिए ''ले लेता है।''[34]NASB वाली मेरी प्रति के मार्जिन नोट में, "Lit. *throw out* " है।[35]लूका 21:24 में ''अन्यजातियों'' उसी शब्द से अनुवाद किया गया है, जिससे प्रकाशितवाक्य 11:2 वाला ''अन्यजातियों।'' ऐसा ही एक वाक्य दानिय्येल 8:13 में मिलता है, जो ''पवित्र स्थान के रौंदे जाने'' की बात करता है। कुछ लोग प्रकाशितवाक्य 11:1, 2 का अर्थ लूका 21:24 और दानिय्येल 8:13 जैसा ही बनाने की कोशिश करते हैं, परन्तु इसमें महत्वपूर्ण अन्तर हैं: दानिय्येल 8 मन्दिर के *अपवित्र किए जाने* और लूका 21 मन्दिर के *विनाश* की बात करते हैं; परन्तु प्रकाशितवाक्य 11 परमेश्वर द्वारा मन्दिर की *रखवाली* की बात करता है। दानिय्येल 8 और लूका 21 एक भौतिक मन्दिर की बात की करते हैं जबकि प्रकाशितवाक्य आत्मिक मन्दिर (कलीसिया) की। [36]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''तूफ़ान के बीच की शांति'' में 1,44,000 के मुहर किए जाने पर नोट्स देखें। मुहर किए जाने की तुलना नापने से करना दिलचस्प है: (1) *मुहर किए हुए* 1,44,000 आत्मिक यहूदी (मसीही थे) जबकि *नापे गए* लोग आत्मिक यहूदी मन्दिर (कलीसिया) थे। (2) 1,44,000 को गिनकर नापा गया था; मन्दिर को छड़ी से नापा गया था। (3) दोनों ही मामलों में रखवाली मुख्य लक्ष्य था। [37]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ परमेश्वर का ''यहां अजगर होंगे!'' के आरम्भ में देखें। [38]टीकाओं में लगभग 3-1/2 वर्ष रहने वाले कई कालों की सूची मिलती है, जो बयालीस महीनों के संकेत से सम्बद्ध हो भी सकते हैं और नहीं थी; एलिय्याह नबी को 3-1/2 वर्ष तक पाला गया था (1 राजा 17:1-5; याकूब 5:17; लूका 4:25)। सिदीकिया के विद्रोह के जवाब के लिए बेबिलोनियों ने लगभय बयालीस महीने का समय लगा दिया (यिर्मयाह 52)। अंतियोकुस एपिफेनस के विरुद्ध मकाबियों के विद्रोह में, अंतियोकुस द्वारा मन्दिर के अपवित्र किए जाने से

लेकर ज्युदास मकेबियुस के समय शुद्धिकरण और बहाली में लगभग तीन वर्ष लग गए। यरूशलेम पर रोम का कब्ज़ा लगभग बयालीस महीने तक रहा। आप चाहें तो इसे सारा या कुछ भाग बता सकते हैं। परन्तु बयालीस महीने को ''पूर्ण मसीह युग'' सहित समय के *किसी भी* मूल काल केरूप में लेने के जाल में फंसने से सावधान रहें। (बयालीस महीने जिस सच्चाई का संकेत देते हैं वह *पूरे* मसीही काल के लिए होगी, परन्तु मसीही काल को ऐसे न सोचना बेहतर है।) [39]अधिकतर प्रीमिलेनियलिस्ट लोग (1) 3-1/2 को अक्षरश: लेते है और (2) फिर ज़ोर देते हैं कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में 3-1/2 वर्ष के *दो* काल हैं: एक तो पशु के आने से पहले का और एक पशु के आने के बाद का (क्लेश के अपने काल्पनिक सात वर्षों को जोड़ते हुए)। हम इस बात पर ज़ोर देना जारी रखेंगे: (1) 3-1/2 वर्ष के सभी काल सांकेतिक है और (2) सब में एक ही विचार है (अर्थात, सांकेतिक रूप से सब ''समय के उसी काल की बात करते हैं'')। [40]''यहूदी लोग 360 दिन के वर्ष पर काम करते थे। (उसने सौर्य वर्षों के साथ अपने कैलेंडर को मिलाने के लिए, लीप का महीना दूसरा आधार जोड़ लिया)'' (मैक्गुइगन, 156)।

[41]यह अभिव्यक्ति पहली बार दानिय्येल की पुस्तक में इस्तेमाल हुई थी (देखें 7:25; 12:7)। [42]मैक्गुइगन, 156. [43]अर्थात स्वीकार्यता के कुछ मानकों को पूरा करना कठिन है। [44]नये नियम में आमतौर पर यह ज़ोर दिया जाता है कि कोई व्यक्ति केवल *दो* जगहों पर हो सकता है या तो संसार में या कलीसिया में (उदाहरण के लिए देखें कुलुस्सियों 1:13)। [45]किड्डुल, 189. [46]हैंड्रिक्सन, 154. [47]इस स्थिति को मेरा अति सरल करना इसके साथ न्याय नहीं है। इस स्थिति पर और अध्ययन के लिए देखें होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 251; मौरिस, 146-47; केयर्ड, 132. [48]जुडसोनिया में अपनी क्लास में इस व्याख्या का संक्षेप में वर्णन करते समय मैंने केवल न समझ आने वाली बातों को देखा। यदि आप इस सामग्री का इस्तेमाल क्लास में करते हैं तो मैं सुझाव दूंगा कि या तो आप (1) इस सम्भावना पर अधिक समय लें या (2) केवल इतना कहें, ''और भी सम्भावनाएं हैं'' और इस स्थिति को विस्तार से बताए बिना आगे बढ़ जाएं। केवल यही मुख्य बिन्दु नहीं है। [49]''पवित्र नगर'' को कलीसिया जैसी इसकी शक्ति *और* कमज़ोरी ही बनाती है। इसे शक्ति माना जा सकता है। सांसारिक यरूशलेम अब परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों में शामिल नहीं है, परन्तु ''ऊपर की यरूशलेम'' है (गलातियों 4:26; इब्रानियों 12:22)। दूसरी ओर, यदि आयत 8 वाला ''बड़ा नगर'' वही है तो यह पक्की कमज़ोरी है। आयत 8 वाला ''बड़ा नगर'' बाबुल/रोम को कहा गया है न कि कलीसिया को। (इस पुस्तक में ''क्या आप मरने को तैयार हैं?'' पाठ में आयत 8 पर टिप्पणियां देखें।) [50]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''तूफ़ान के बीच की शांति'' में 1,44,000 पर मुहर पर चर्चा में हमने सुरक्षा और कष्ट की अवधारणाओं को ऐसे ही मिलाया था।

[51]इस पुस्तक में ''मीठा और कड़वा'' पाठ देखें।[52]हेली, 252. [53]एल्ड्रेड एकोल्स, *हैवन्ट यू हर्ड? देअर इज़ ए वार गोइंग ऑन!: अनलॉकिंग द कोड टू रैवलेशन* (फोट वर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग, 1995), 182. [54]वही. 181. [55]डेविड रोपर, *वाइसेस क्राइंग इन द विल्डरनेस* (सेलिस्बरी [अडलेड], साउथ ऑस्ट्रेलिया: रेस्टोरेशन पब्लिकेशंस, 1979)। [56]पॉल ली टैन, *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ 7,700 इलस्ट्रेशंस* (रॉकविल्ले, मेरीलैंड: अश्युरेंस पब्लिशर्स, 1979), 442. [57]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो सुनने वालों को अपने आप को जांचना आरम्भ करने के लिए प्रोत्साहित करें कि वे यीशु में डूबे हैं या नहीं (मरकुस 16:16) और यदि डूबे हैं तो क्या वे प्रभु के विश्वासी हैं या नहीं (प्रकाशितवाक्य 2:10)। उनसे आग्रह करें कि यदि अपनी जांच से उन्हें आत्मिक कमी का पता चलता है तो उस समस्या का तुरन्त समाधान करें!

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. छठी तुरही और सातवीं तुरही के बीच के अन्तराल के उद्देश्य की समीक्षा करें।
2. पाठ के अनुसार अध्याय 11 हेरोदेस को कठिन क्यों *लगा*?

3. अन्य जातियों के आंगन पर विशेष रूप से ध्यान देते हुए हेरोदेस के मन्दिर के अलग-अलग भागों पर चर्चा करें।
4. क्या 11:1, 2 मन्दिर कहलाने वाले भवन के लिए है ?
5. ''मन्दिर'' किसे कहा गया है ?
6. वचन में ''नापने'' का क्या महत्व है, रक्षा करने के लिए क्या आप नापने के किसी और उदाहरण पर विचार कर सकते हैं ?
7. ''बयालीस महीने'' का क्या अर्थ है ? इस संख्या का सांकेतिक अंक ''3-1/2'' से क्या सम्बन्ध है ? प्रकाशितवाक्य में ''3-1/2'' का क्या महत्व है ? प्रकाशितवाक्य में उस ''3-1/2'' को किन ढंगों से व्यक्त किया गया है ?
8. ''आंगन'' और ''पवित्र नगर'' के सम्भावित अर्थों पर चर्चा करें। क्या हमें 11:1, 2 के मूल संदेश को समझने के लिए जानने की आवश्यकता है कि वे सही-सही किसे दर्शाते हैं ?
9. नापने का परमेश्वर का मापदण्ड क्या है ?
10. उन तीन वस्तुओं पर चर्चा करें, जिन्हें यूहन्ना ने नापने वाली बताया।
11. अपनी जांच के महत्व पर चर्चा करें।

मन्दिर को नापना (11:1, 2)

दर्शन	अर्थ	प्रासंगिकता
यूहन्ना [redacted]	परमेश्वर का सेवक (प्रकाशितवाक्य 1:1, 2)	हम सब ... (रोमियों 14:12)
[redacted] की रक्षा ता 121:7; यों 3:3; 5).	परमेश्वर का वचन (यूहन्ना 12:48; 2 पतरस 1:3)	जांचें... (विलापगीत 3:40; 1 कुरिन्थियों 11:28; 2 कुरिन्थियों 13:5)
[redacted]	परमेश्वर के लोग (कलीसिया) (1 कुरिन्थियों 3:16; 2 कुरिन्थियों 6:16; इफिसियों 2:21; 1 पतरस 2:5)	अपने आप को (भजन संहिता 26:2; यिर्मयाह 12:3; 1 कुरिन्थियों 4:4; 1 थिस्सलुनीकियों 2:4)

क्या हम नाप में पूरे हैं ?

मन्दिर को नापना (11:1, 2)